विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

शैक्षिक प्रयोग 2023

1. प्रदेश की प्रवीण सूची में उत्कृष्ट प्रदर्शन
2. शिक्षार्थियों में वैज्ञानिक अभिरुचि का विकास
3. सुलेख प्रयोग
4. कक्षा शिक्षण प्रयोग
5. वंदना सभा में कक्षानुसार गतिविधि
6. बाल मेला शिशु नगरी का आयोजन
7. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशालाएँ
8. व्यवहार, स्वास्थ्य और पर्यावरण की शिक्षा
9. उमंग दीपावली हाट
10. स्वावलंबी शिक्षा की ओर कदम
11. विद्यालय में कौशल विकास
12. कौशल विकास वर्ग का आयोजन
13. विज्ञान से व्यक्तित्व विकास

विद्या भारती महाकौशल का प्रदेश की प्रवीण सूची में उत्कृष्ट प्रदर्शन

महाकौशल | शिक्षा एक गतिशील एवं चैतन्यमयी वैचारिक प्रक्रिया है जो बालक के आचार, विचार, व्यवहार एवं भावना में ऐसा परिवर्तन ला देती है जिससे न केवल उसकी सुप्त प्रतिभाओं एवं उसमें सद्गुणों का विकास होता है अपितु बालक घर का दीप एवं जग का दिवाकर बनकर समाज के लिये एक वरदान सिद्ध हो जाता है। इसी में शिक्षण प्रक्रिया की सार्थकता निहित रहती है। शिक्षा को जीवन की प्रयोगशाला कहा गया है जिसके समन्वय से छात्र विभिन्न संस्कारों को समाहित कर तन, मन, बुद्धि आत्मा का समन्वित विकास करता है और श्रेष्ठ या उच्च बनने के लिये दिन रात मेहनत करता है स्वाध्याय करता है, कोचिंग करता है अर्थात् अध्ययन की गंगा में डूब कर रसमय हो जाता है। आज हमारी शिक्षा प्रणाली में समग्रता का अभाव सा दिखता है परंतु छात्र के स्तरानुसार प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर शिक्षा के स्तर बनाये गये हैं। स्मरण है कि कुछ वर्ष पहले प्राथमिक स्तर पर कक्षा पांचवी एवं माध्यमिक स्तर पर कक्षा आठवीं की बोर्ड परीक्षा हुआ करती थी। छात्र उच्चतम अंक लाने के लिये अथक मेहनत करते थे और जिला की सम्भाग की सूची में मेरिट में स्थान लाते थे।

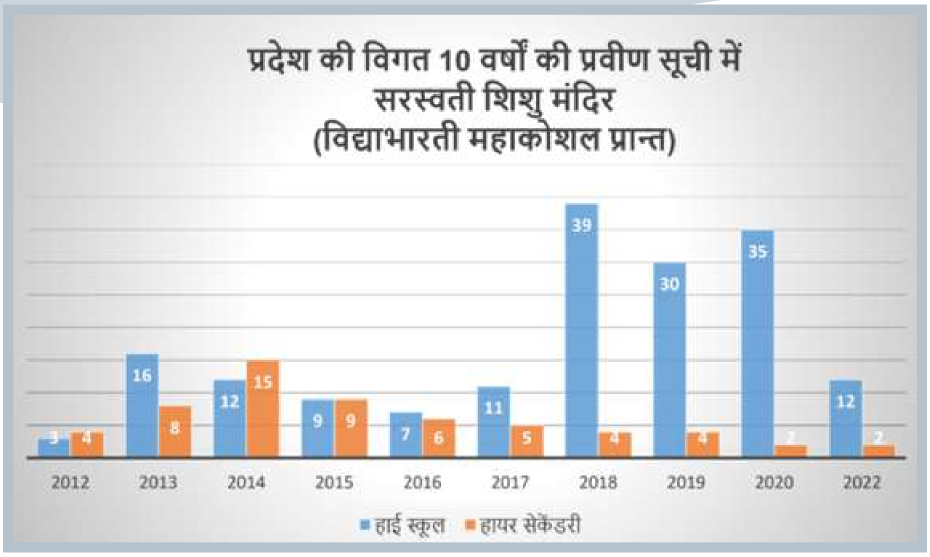

आचार्य अपने छात्रों को मेरिट में लाने के लिये प्रातः 04:00 बजे घर घर छात्रों को जगाते थे, विद्यालय में प्रतिदिन अतिरिक्त कक्षा लेते थे। महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तरी का संग्रह करते थे, घर में संपर्क करते अर्थात रात दिन कार्य में लगे रहते थे। परंतु आज जब कक्षा दसवीं एवं बारहवीं की परीक्षा बोर्ड की होती है उसमें भी हम अछूते नहीं है। प्रतिवर्ष माध्यमिक शिक्षा मण्डल से जारी मेरिट सूची साक्षी है कि प्रतिवर्ष विद्या भारती सरस्वती शिक्षा परिषद द्वारा संचालित सरस्वती शिशु मंदिर के छात्र माध्यमिक शिक्षा मण्डल की सूची में अपना प्रभाव बनाए हुये हैं।

सर्वाधिक मैरिट सूची में स्थान पाने के पीछे अध्ययन से जो वैशिष्ट सामने आये है वह निम्नलिखित है-

- छात्र की विद्यालय में नियमित उपस्थिति।
- शत प्रतिशत अंक लाने के लिये दृढ संकल्प की भावना।
- विषयाचार्यों द्वारा मन से अध्यापन कार्य
- पढाई गई विषय सामग्री की घर में पुनरावृत्ति।
- नोट्स तैयार करना।
- स्मरण शक्ति बढ़ाने हेतु स्वाध्याय करना।
- टीवी, मोबाइल, कम्प्यूटर से दूरी।
- अध्ययन कार्य योजनाबद्ध समय सारिणी के अनुसार करना।
- बोर्ड के ब्लूप्रिंट के आधार पर मॉडल प्रश्न पत्र बनाकर अभ्यास कराया जाता है।
- आचार्य का सतत् सम्पर्क एवं सहयोग।
- मेधा मास- जनवरी एवं फरवरी माह को मेधा मास के रूप में मनाते हैं। विद्यालय स्तर पर की विशेष कक्षाएं प्रारंभ की जाती है। छात्रों एवं अभिभावकों की काउंसलिंग की जाती है।
- जिले स्तर पर मेधावी छात्रों का पांच दिवसीय वर्ग लगाते हैं। इसमें विषय विशेषज्ञ जाता है। इस वर्ग में सम्मिलित होने के लिए प्रत्येक विद्यालय से 5 छात्रों का चयन किया जाता है।
- रात्रि कालीन कक्षाएं लगाई जाती है। इसमें आचार्य, अभिभावक एवं सभी की भागीदारी रहती है।
- उपर्युक्तानुसार प्रयोग पूरे वर्ष भर चलते हैं।

इस प्रकार माध्यमिक शिक्षा मण्डल की प्रावीण्य सूची में ही नहीं अपितु सेवा के क्षेत्र में प्रशासनिक क्षेत्र में, राजनैतिक क्षेत्र में, उच्च पदों पर पहुँच कर विद्या भारती सरस्वती शिशु मंदिर का नाम गौरवांवित कर रहे हैं।

शिक्षार्थियों में वैज्ञानिक अभिरुचि का विकास कर रही गणित प्रयोगशाला

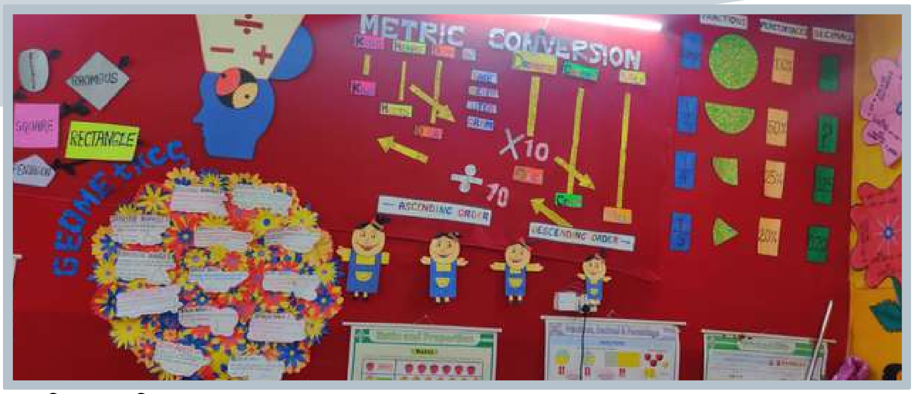

दिल्ली । शिशु भारती विद्यालय नं. 2, गाँधी नगर, दिल्ली में गणित प्रयोगशाला की कार्यशाला को ग्रीष्मावकाश में प्रारंभ किया गया था। इसमें कक्षा तीसरी से आठवीं तक के छात्र-छात्राओं को सम्मिलित किया गया। गणित प्रयोगशाला में छात्रों द्वारा self-explanatory दीवारों का निर्माण किया गया और चारों दीवारें वर्गों के अनुसार विभाजित की गयीं।

प्राथमिक विंग की अवधारणा को दर्शाने वाली पहली दीवार, उच्च प्राथमिक विंग की अवधारणा को दर्शाती दूसरी दीवार, बहु-शास्त्रीय अधिगम को प्रदर्शित करती तीसरी दीवार और चौथी दीवार पर वैदिक गणित, भारतीय गणितज्ञों के सूत्र दर्शाए गए। इसमें अधिकतम वस्तुएं गणितीय आकृतियों से सुसज्जित हैं, जैसे फर्नीचर के लिए घनाभ आकृति का प्रयोग किया गया है। कुछ तैयार मॉडल खरीदे भी गए जैसे पूर्णांक की अवधारणा, संख्या रेखा, ज्यामितीय अवधारणा, रंगीन मोती, अबेकस आदि। इन प्रयोगशालाओं में विभिन्न प्रकार के प्रयोग करके बालक न केवल करके सीखते हैं अपितु व्यावहारिक एवं जीवनोपयोगी ज्ञान भी प्राप्त करते हैं। प्रयोगशाला में कार्य करते हुए शिक्षार्थियों में दायित्व बोध का विकास होता है और शिक्षण प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनती है।

गणित प्रयोगशाला शिक्षार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास में सबसे अधिक प्रभावी और व्यावहारिक साधन है।

गणित प्रयोगशाला में सत्र 2022-23 में विद्यार्थियों ने तीन मॉडल निर्मित किए-

1) पाइथागोरस प्रमेय
2) प्रिज्म और पिरामिड में अंतर
3) METRIC MEASURES

3-डी सौरमंडल बना सामाजिक विज्ञान प्रयोगशाला का मुख्य आकर्षण

विद्यालय में सामाजिक विज्ञान प्रयोगशाला के निर्माण में कक्षा सातवीं से दसवीं तक के छात्रों एवं पूर्व छात्रों को सम्मिलित किया गया। इस प्रयोगशाला की चार दीवारों को वर्गों के अनुसार विभाजित किया गया। ये दीवारें सामाजिक विज्ञान के विषयों जैसे भूगोल, इतिहास, राजनीति शास्त्र एवं अर्थशास्त्र को समर्पित हैं। इन दीवारों को विशेष नाम दिया गया है और ये MULTI-DISCIPLINARY APPROACH पर आधारित हैं। सामाजिक विज्ञान प्रयोगशाला का मुख्य आकर्षण 3-डी सौरमंडल है। प्रयोगशाला में स्मार्ट टी.वी का प्रयोग किया गया है जिसके माध्यम से समय-समय पर विषय से संबंधित वीडियो आदि दिखाए जाते हैं। छात्रों को स्वयं को प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया जाता है। यहां कार्य करते हुए छात्रों में दायित्व बोध का विकास होता है। प्रयोगशाला में संस्कार केंद्र के छात्रों को भी समय-समय पर लाया जाता है। सामाजिक विज्ञान प्रयोगशाला छात्रों को रचनात्मक रूप से सोचने, जीवन मूल्यों को विकसित करने और उनकी रुचियों का पता लगाने के लिए अवसर प्रदान करती है।

सत्र 2022-23 में विद्यार्थियों ने 5 मॉडल्स का निर्माण किया-

1.Volcano (Working Model)
2.Soil Profile
3.Monestry
4.Layers of earth
5.Working of river and Sea waves

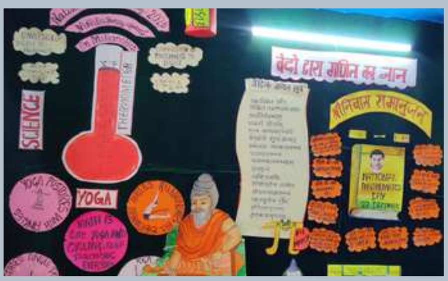

सुलेख प्रयोग – ब्रह्मपुरी आदर्श विद्यामंदिर चांदपोल चौका, जोधपुर

जोधपुर | सुलेख का यह प्रयोग छात्रों के साथ किया गया। सभी छात्रों से सुलेख लिखवाया और उन्हें पंजिका बनाकर एकत्र कर रखा तदनंतर इन नियमों को समझाते हुए उनसे पुनः लिखवाया और तुलना की गई। इस प्रकार उनकी रुचि विकसित करें। पांचवी कक्षा तक नित्य सुलेख अनुलेख श्रुतलेख अभ्यास कक्षा में एक कालांश द्वारा होना चाहिए छोटे बच्चों को लिखते हुए देखना चाहिए कि वह अक्षरों में मात्राओं को उचित रीति से बनाते हैं या नहीं। ब्रह्मपुरी आदर्श विद्यामंदिर चांदपोल चौका, जोधपुर में सुलेख का स्तर जानने के लिए समग्र अवलोकन करने की आवश्यकता थी अतः हमने सत्र के आरंभ में ही छात्रों से एक कागज पर एक तरफ 8- 10 पंक्तियों का लेख लिखवा कर स्तर का अवलोकन किया। अब उनके आकलन के आधार पर सभी कक्षाओं में सुलेख के नियमों का चार्ट लगवाया गया तथा तद्अनुरूप अभ्यास करवाया गया। साथ ही साथ बालक जैसा देखता है वैसा ही लिखता है इस हेतु आचार्यो को भी सुलेख का अभ्यास करवाकर बोर्ड पर सुंदर लिखने के लिए प्रेरित किया गया। सत्र के आरंभ में जो हस्तलेख हमने सभी छात्रों का संग्रह किया था अब अभ्यास के उपरांत पुनः उसी पेज पर उस छात्र से वही लेखन उन्हें करवाया गया तथा तुलना की गई।

इस तुलना में पाया गया कि 225 छात्रों में से 200 छात्रों का लेख ठीक हो गया। सुलेख के नियमानुसार व्यवस्थित हो गया है तथा उनमें भी 45 से 50 बच्चों का लेख बहुत सुंदर प्रदर्शन योग्य हो गया है।
निरंतर अभ्यास से जब लेख अच्छा हो जाए तब उसका अलग प्रकार के कैलीग्राफी पेन के प्रयोग से कैलीग्राफी लेखन का भी अभ्यास करवाया गया जिससे चमत्कारी प्रभाव छात्रों के लेख में अभिभावकों में देखने को मिला। समाज में एक अलग पहचान बनी। प्रांत व क्षेत्र तक एक विशेष पहचान बनी।

एक नव विचार नवाचार को जन्म देता है अतः हमारा मन शुभ संकल्पों व विचारों वाला बने जिससे छात्रों को ऊर्जा मिले तथा वे भी कई नई कलाओं के स्वामी बन कर प्रतिष्ठा प्राप्त करते रहें। समय समय पर विद्यालय के सभी बच्चों को सामूहिक रूप से विशेष लेख वाले योग्य जनों को बुलाकर लेखन का प्रदर्शन करवाया गया। जिनमें कुछ पेंटर कुछ कलात्मक लिखने वाले कलाकार थे उनके लेखनी व कला से छात्र बहुत प्रेरित होते हैं। वह उनका अनुकरण करने का प्रयास करने लगे तथा लेख सुंदर व कलात्मक होने लगा। जिन छात्रों के लेख में सर्वाधिक सुधार हुआ है उनको प्रोत्साहित करना भी अन्य को प्रेरणा देता है। फिर तद्अनुरूप प्रयास प्रारंभ करते हैं कोई भी कला एक सतत् प्रक्रिया है एकाएक कोई कलाकार नहीं हो जाता। निर्धारित निश्चित नियमित अनवरत अभ्यास से ही एक कला का स्वामी बन सकता है सच्चा साधक बन सकता है इससे भी बड़ी बात यह है कि उस व्यक्ति या छात्र की उस कला विशेष को सीखने के प्रति श्रद्धा है कि नहीं पता सर्वप्रथम सुलेख की प्रति उनका भाव निर्माण करना परम आवश्यक है। सुंदर लेख निश्चित रूप से सुंदर मानव निर्माण में सहयोगी होता है। अनुशासन में सदाचरण की ओर प्रवृत्त करता है विद्या भारती की एक पहचान हमारा सुलेख भी है उसकी ओर हमारा ध्यान पुनः आकृष्ट होता है तो समाज में हमारे विशेष पहचान पुनः स्थापित हो इसी संकल्प के साथ हम सभी प्रयासरत हों।

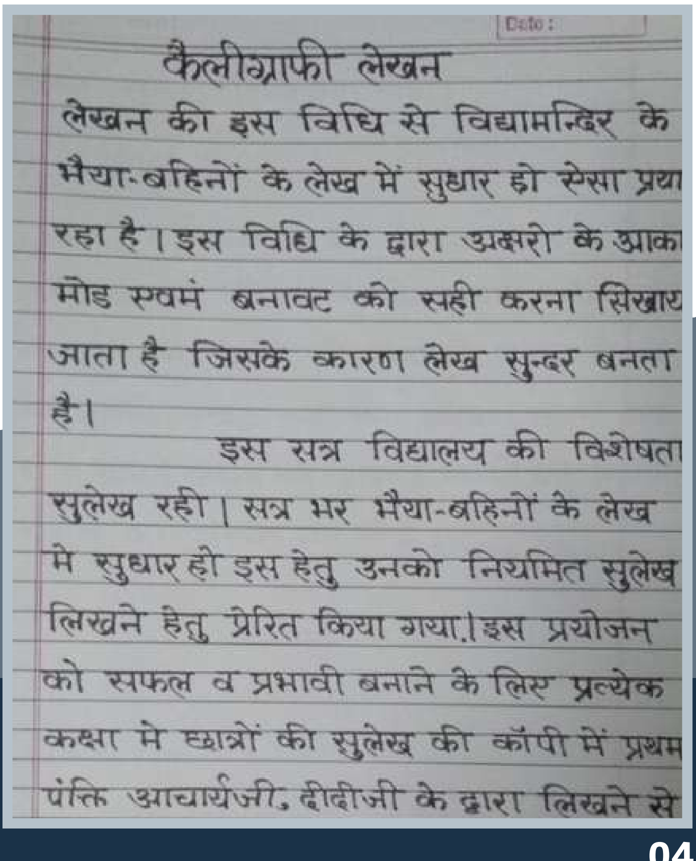

कक्षा शिक्षण प्रयोग

भारतीय विद्या मंदिर उच्च विद्यालय नैनसू , ऊधमपुर (जम्मू-कश्मीर)

जम्मू एवं कश्मीर | भारतीय विद्या मंदिर उच्च विद्यालय नैनस, उधमपुर में कक्षा शिक्षण पर नया प्रयोग किया गया। आचार्य तो कक्षा में पढ़ाते ही हैं, छात्रों को भी कक्षा शिक्षण सिखाया गया। छात्रों को सबसे पहले पंचपदी पद्धति से पाठ योजना बनाना सिखाया गया। आचार्य के सहयोग से छात्र सभी विषयों की पाठ योजना तैयार करते हैं। उसके उपरांत वह विषय-वस्तु के अनुरूप दृश्य-श्रव्य साम्रगी, PPT और Activity तैयार करते हैं। यह प्रक्रिया माह के एक सप्ताह चलती है। पूरे वर्ष अनुक्रमांक अनुसार सभी छात्रों को दायित्व दिया जाता है। प्रत्येक छात्र इसमें भाग लेता है और विषयवस्तु से संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए इंटरनेट और पुस्तकालय से पुस्तकों को पढ़ता है। छात्र अपने सहपाठियों से बिना संकोच प्रश्न पूछते हैं। इसलिए कक्षा शिक्षण से पहले छात्र पाठ से संबंधित अन्य जानकारी भी प्राप्त करता है।

यह शिक्षण विधि अपनाने से-

- **छात्रों में आत्मविश्वास की भावना जागृत हुई।**
- **छात्रों में प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न होती है।**
- **बच्चों ने श्यामपट्ट पर लिखने की विधि सीखी।**
- **विषय-वस्तु के अनुरूप कविता, गीत, नाटक तैयार करने से छिपी प्रतिभा सामने आई।**
- **पढ़ाई के प्रति छात्रों की रुचि बढ़ी।**
- **छात्रों में मूल्यांकन की भावना जागृत हुई।**
- **अभिभावकों ने भी बच्चों को तैयार करने में अहम भूमिका निभाई।**
- **विद्यालय के इस प्रयास से बच्चों का सर्वांगीण विकास हुआ।**
- **कक्षा में आनंदमय वातावरण बना। सभी छात्र प्रसन्नचित होकर पढ़ाई करने लगे।**
- **अभिभावक और बच्चे विद्यालय की ओर आकर्षित हुए।**

कक्षाओं में सामूहिक चर्चा

पाठ योजना में सामूहिक चर्चा का एक विशेष स्थान है। विद्यालय में सभी आचार्य सामूहिक चर्चा के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करते हैं और हर पाठ के अंत में आचार्य कुछ छात्रों को सामूहिक चर्चा के लिए कहते हैं। हर समूह का छात्र पहले से तय करता है कि वह किस बिंदु को उजागर करेगा। हर बच्चा अपने समूह में पाठ के विशेष बिंदु को अपने ग्रुप में चर्चा के लिए सामने लाता है। सामूहिक चर्चा में आचार्य कमजोर बच्चों को मेधावी बच्चों के साथ समूह में रखते हैं और हर बच्चे को पाठ के अनुसार अपने विचार व्यक्त करने का अवसर देते हैं। बाद में बच्चों से उनके टॉपिक पर रिव्यूज भी लेते हैं।

विकास

कक्षा में आचार्य बच्चों को जब सामूहिक चर्चा में शामिल करते हैं तब धीरे-धीरे बच्चे ज्यादा रुचि के साथ कक्षा में ध्यान केंद्रित करते हैं। सामूहिक चर्चा से छात्रों को सोचने, अलग-अलग दृष्टिकोण विकसित करने और अधिक गहराई से अन्वेषण करने का अवसर मिलता है। रिव्यूज रखने में भी बच्चे बिल्कुल हिचकिचाते नहीं है। सामूहिक चर्चा में सभी बच्चों को बराबर बोलने का अवसर मिलता है। इससे उनका मनोबल और भी ज्यादा बढ़ता है।

लाभ

सामूहिक चर्चा से संचार कौशल, समूह प्रबंधन कौशल, रचनात्मकता, सामान्य जानकारी आदि का विकास हुआ है। बच्चे अब किसी भी कार्य को करने की पहल करते हैं। सामूहिक चर्चा से बच्चों को यह ज्ञान हुआ की विषय का संपूर्ण ज्ञान और अच्छा स्पीकर कैसे बनना है। इसके good listener के गुण भी विकसित हुए हैं। आचार्य बच्चों को कभी-कभी current events पर चर्चा के लिए भी प्रेरित करते हैं जैसे-केंद्रीय बजट, रूस-यूक्रेन युद्ध, महिला सशक्तिकरण, जी-20 आदि। सामूहिक चर्चा के अंत में समूह में से 1-1 बच्चा बिंदुओं को संक्षेप में प्रस्तुत करता है।

वंदना सभा में कक्षानुसार गतिविधि , नारायणा विहार

नई दिल्ली | आशा लखोटिया सरस्वती बाल मंदिर, जी-ब्लाक, नारायणा विहार, नई दिल्ली। वंदना सभा किसी भी विद्यालय का एक ऐसा दर्पण है जो उस विद्यालय के भौतिक, सामाजिक, मानसिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक वातावरण का साफ़ एवं स्पष्ट चित्र दर्शाता है। विद्यालय के दैनिक जीवन में अनुशासन व एकरूपता का प्रथम पाठ वंदना सभा से ही प्रारंभ होता है। विद्यालय में वंदना सभा में होने वाली नियमित गतिविधियों के अतिरिक्त गत 5 वर्षों से एक विशेष प्रयोग किया जा रहा है। इसके तहत साप्ताहिक व्यवस्था के अनुसार प्रतिदिन एक कक्षा की गतिविधि वंदना सत्र में संपन्न होती है जिसमें छात्र-छात्राओं द्वारा कक्षाचार्य के मार्गदर्शन में तैयार की गई शैक्षिक व सहशैक्षिक गतिविधि जैसे-कविता, गीत, नाटिका, गणित अथवा विज्ञान से संबंधित गतिविधि आदि का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। गतिविधि में कक्षा के सभी छात्रों की प्रतिभागिता रहती है।

तैयारी

पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार सप्ताह में एक कक्षा की प्रस्तुति एक बार होती है जिसमें पूर्ण सप्ताह कक्षाचार्य द्वारा उस गतिविधि की तैयारी करवाई जाती है। जिसमें उच्चारण, क्रियाकलाप, अभिनय, शैक्षिक विषयों का अभ्यास आदि से संबंधित बारीकियों पर बच्चों का ध्यान दिलाया जाता है।

उद्देश्य

- **शत प्रतिशत बच्चों की प्रतिभागिता से सभी के मनोबल/ आत्मविश्वास में वृद्धि करना।**
- **सामूहिक रूप से कार्य करने के फलस्वरूप अनुशासन, एकता व सहयोग की भावना व धैर्य का विकास करना।**
- **शुद्ध उच्चारण व अभिनय सिखाना तथा मंचीय कार्यक्रमों में भाग लेने से संबंधित भय समाप्त करना।**
- **शैक्षिक विषयों को अपेक्षाकृत अधिक रोचक बनाकर अधिगम सुनिश्चित करना।**

विषय वस्तु

शैक्षिक व सह शैक्षिक विषयों से संबंधित गतिविधियों से विषय विकास को बल मिलता है। वर्ष में 5-6 बार विषयवस्तु भी प्रधानाचार्या द्वारा निर्धारित की जाती है। जैसे पहाड़े, विद्या भारती गीत, पाठ्य पुस्तक से कविताएं, सामाजिक जागरूकता संबंधी नाटक इत्यादि। इसके अतिरिक्त आचार्यों को स्वविवेक से गतिविधि का चुनाव करने की स्वतंत्रता दी जाती है।

गतिविधियों के उदाहरण

- **वाद्यों के साथ पहाड़ो का गायन**
- **अंग्रेजी-हिंदी कविता गायन (पाठ्यपुस्तक से)**
- **समूह गान**
- **गणित संबंधी गतिविधियाँ e.g geometrical shapes (2D, 3D shapes), Vedic maths, definitions, geometrical concepts, basic operations, tables, etc.**
- **सामाजिक ज्ञान संबंधी गतिविधियाँ e.g definitions, state and capitals, fundamentals rights and duties, parts of UNO, Representation of states etc.**
- **विज्ञान संबंधी गतिविधियाँ e.g body parts and their functions components of food, fiber to fabric, body movements, Living organism and surroundings, Nutrition in plants and animals, weather, climate etc.**

परिणाम - वंदना सभा में गतिविधियों को प्रस्तुत करने से छात्रों के आत्म विश्वास में वृद्धि हुई, उच्चारण शुद्ध हुआ, मनोबल में वृद्धि हुई एवं सहयोग की भावना का विकास हुआ। जिन विषयों की प्रस्तुति वंदना सभा में की गई उन विषयों से सम्बंधित ज्ञानार्जन सुनिश्चित हुआ।

बाल मेला शिशु नगरी का आयोजन

जोधपुर। पाली । 4 जनवरी । मण्डिया रोड स्थित सरस्वती शिशु मन्दिर में बाल मेला एवं शिशु नगरी का आयोजन किया गया। मेले का उद्घाटन विधायक ज्ञानचन्द पारख एवं भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष महेन्द्र बोहरा ने किया। इस दौरान राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत खेल-खेल में शिक्षा तथा बिना बस्ता श्रव्य-दृश्य आधारित शिक्षा के उदेश्य की पूर्ति में बाल नगरी की बसावट की गई।

इस अवसर पर भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष महेन्द्र बोहरा, भारतीय जैन संघ के अध्यक्ष रमेश बरडिया, अग्रवाल समाज के अध्यक्ष सुनील गुप्ता, समाजसेवी पुखराज लसौड़, घनपत चोपड़ा, सुनील पौद्दार, राजस्थान क्षेत्र शिशु वाटिका प्रमुख ओमप्रकाश शर्मा, प्रान्त सचिव महेन्द्र दवे, प्रान्त निरीक्षक गंगाविष्णु आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे।

पांच कर्मेन्द्रियों तथा पांच ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से बालकों के प्राणिक, मानसिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक विकास के लिए विज्ञान प्रयोगशाला, कलाशाला. वस्तु संग्रहालय, प्रदर्शनी, रंगमंच, कार्यशाला, चित्र पुस्तकालय, आदर्शघर, आदर्श ग्राम, शिशु बाजार, जिला गायत्री परिवार का साहित्य संग्रह, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि संपादित किए।

स्थानीय मण्डिया रोड स्थित सरस्वती शिशु मन्दिर में बाल मेला एवं शिशु नगरी का आयोजन उद्घाटन विधायक ज्ञानचन्द पारख, एवं भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष महेन्द्र बोहरा के अतिथिय में हुआ।

सरस्वती शिशु मन्दिर की प्रधानाचार्या लक्ष्मी चौधरी ने बताया कि बाल मेला एव शिशु नगरी का आयोजन बुधवार प्रातः 10 बजे भारतमाता पूजन तथा मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्जलन के साथ प्रारम्भ हुआ ।

बालकों के मनोरंजन की दृष्टि से झूले, खान-पान की व्यवस्था की गई थी।

स्थानीय मण्डिया रोड स्थित सरस्वती शिशु मन्दिर में बाल मेला एवं शिशु नगरी का आयोजन उद्घाटन विधायक ज्ञानचन्द पारख, एवं भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष महेन्द्र बोहरा के अतिथिय में हुआ।

**सरस्वती शिशु मन्दिर की प्रधानाचार्या लक्ष्मी चौधरी ने बताया कि बाल मेला एव शिशु नगरी का आयोजन बुधवार प्रातः 10 बजे भारतमाता पूजन तथा मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्जलन के साथ प्रारम्भ हुआ ।
बालकों के मनोरंजन की दृष्टि से झूले, खान-पान की व्यवस्था की गई थी।**

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन

दिल्ली । NEP-2020 के बाद देश ने सीखने-सिखाने का एक नया चिंतन प्रारंभ कर दिया है। इसके तहत सीखने पर आधारित बाल-केंद्रित शिक्षा अपनाते हुए जीएलटी सरस्वती बाल मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नेहरू नगर, दिल्ली निरंतर प्रयत्नशील है। इसी कड़ी में विद्यालय के सभी आचार्यों के लिए विशेष प्रशिक्षण की श्रृंखला शुरू की गई।

विद्यालय ने शैक्षणिक व आवश्यकता आधारित प्रशासनिक दोनों दृष्टिकोण से सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण के लिए वर्ष 2022-23 में 25 सत्र आयोजित किए।

सभी शिक्षकों को तज्ञ विषय-विशेषज्ञ के रूप में स्वाध्याय करने, किसी नए शिक्षण-अधिगम को समझने और मूल्यांकन शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए स्वप्रेरणा से चयनित विषय पर सत्र आयोजित करने का अवसर प्रदान किया गया । इन प्रशिक्षण कार्यशालाओं का समय दोपहर के बाद 40-45 मिनट रखा गया। जिससे शिक्षण कार्य प्रभावित न हो।

प्रशिक्षण में अनुभवात्मक शिक्षा, कहानी सुनाना, आईसीटी का उपयोग, खिलौना आधारित शिक्षाशास्त्र छात्रों का 360° आकलन, विशेष आवश्यकता वाले छात्रों की पहचान और परामर्श, उत्तर-पुस्तिकाओं का आकलन, परीक्षा में अंतर्दृष्टि, समावेशी शिक्षा आदि पर जोर दिया गया।

प्रत्येक सत्र के दौरान संकाय सदस्यों को गतिविधियों और संदर्भ सामग्री के पत्रक आदि भी प्रदान किए गए। प्रधानाचार्य वीना गोयल जी ने भी स्वयं विषय तज्ञ के रूप में प्रेरित करने का कार्य किया।

विषय के अतिरिक्त अन्य प्रशासनिक आवश्यकताओं जैसे शिक्षक डायरी, उपस्थिति रजिस्टर के रखरखाव, छात्र के पोर्टफोलियो आदि का भी प्रशिक्षण दिया गया। इसके अलावा एनईपी के आधार पर शिक्षण और पाठ योजना कौशल को निखारने के लिए ब्लूम टैक्सोनॉमी, हॉवर्ड गार्डनर की थ्योरी ऑफ मल्टीपल इंटेलिजेंस पर सत्र के साथ भारतीय शिक्षा पद्धति पर विशेष जोर दिया गया।

विद्यालय में छात्रों के समग्र विकास हेतु पंचकोशीय शिक्षा पद्धति आधारित नवीन शिक्षण तकनीकों का प्रयोग किया जाने लगा है।

जीएलटी सरस्वती बाल मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नेहरू नगर, दिल्ली

मासिक प्रकल्प में दी जा रही व्यवहार, स्वास्थ्य और पर्यावरण की शिक्षा

दिल्ली । आज के परिवेश में हमारे व्यवहार, स्वास्थ्य, खानपान, पर्यावरण, संस्कार आदि से जुड़ी अनेक समस्याएं आ रही हैं। इनके निवारण के लिए राव मेहर चंद सरस्वती विद्या मंदिर, भलस्वा, दिल्ली की ओर से मासिक प्रकल्प चलाए जाते हैं। प्रकल्प के क्रियान्वयन के लिए विद्यालय में बाल भारती की एक केंद्रीय टोली है जिसके अधीन 10 दिन के अंतराल पर कार्य करने वाली तीन टोलियां बनी हैं। प्रकल्प का प्रारंभ प्रथम टोली करती है और दूसरी टोली प्रथम टोली के कार्यों को आगे बढ़ाती है तथा तीसरी टोली प्रकल्प का समापन करती है। प्रकल्प से संबंधित 7-8 मिनट का क्रियाकलाप प्रतिदिन वंदना सत्र में कराया जाता है।

मासिक प्रकल्प का नाम एवं करवाए जाने वाले क्रियाकलाप इस प्रकार से है-

- **अप्रैल: स्वच्छ विद्यालय- स्वयं स्वच्छ रहना, कक्षा-कक्ष में स्वच्छता बनाए रखना, इकोब्रिक बनाना, कूड़ा कूड़ेदान में डालना, कागज का कूड़ा बिल्कुल नहीं करना, कूड़ा कम से कम करने की प्रयास करना।**
- **मई: ग्रीष्म काल में हमारी दिनचर्या एवं हमारा स्वास्थ्य – ग्रीष्म काल में तरल पदार्थों का उपयोग अधिक करना, लू से बचने के उपाय, ओआरएस तैयार करना, प्रातःकाल जल्दी उठना, अपने कार्यों की योजना बनाना, नियमित योगाभ्यास करना, प्रतिर्दिन ग्रीष्मावकाश का गृह काय करना, दादा-दादी तथा नाना-नानी की सेवा करना।**
- **जुलाई: भोजन संबंधी अच्छी आदतें- पौष्टिक भोजन की जानकारी, जंक फूड तथा पौष्टिक भोजन में अंतर, भोजन करने का सही तरीका, भोजन के लिए स्टील के टिफिन का प्रयोग।**

प्रकल्प की बातों को व्यवहार में लाने के लिए कक्षाचार्य एवं बाल भारती के प्रत्येक कक्षा के सदस्य अपनी कक्षा में क्रियान्वयन कराते हैं।

- **अगस्त: आजादी का अमृत महोत्सव- आजादी के नायक, आजादी का इतिहास, आजादी का महत्व।**
- **सितंबर: स्वदेशी- स्वदेशी वस्तुओं की जानकारी, स्वदेशी वस्तुओं की प्रदर्शनी, स्वदेशी वस्तुओं का बच्चों द्वारा प्रयोग।**
- **अक्टूबर: हमारा पर्यावरण- पर्यावरण की जानकारी, जीव, जल, जमीन का संरक्षण।**
- **नवम्बर: वायु प्रदूषण हमारी एक मुख्य समस्या- वायु प्रदूषण क्या? उसके कारण तथा निवारण, दिल्ली का वायु प्रदूषण, वायु प्रदूषण को अपने स्तर पर कैसे कम किया जाए, वायु प्रदूषण के लिए जागरूकता, दिल्ली का एक्यूआई।**
- **दिसंबर: आओ जानें हमारी संस्कृति- भारत के राज्यों की राजधानी, महापुरुष, तीर्थस्थल, भाषा, खानपान, प्रमुख स्थलों की जानकारी।**
- **जनवरी: समर्पण- समाज का ऋण चुकाने के लिए समाज से जो पाया वह बांटना, जो पिछड़े हैं उनकी सहायता करना, दान देने की प्रवृत्ति बढ़ाना, गुल्लकों में धन संचय करवाना। एक बालक 10 लोगों से संपर्क कर समर्पण कराए।**
- **फरवरी: परीक्षा एक उत्सव- परीक्षा कोई तनाव नहीं एक उत्सव है, तनाव कम करने के तरीके, परीक्षा में हार भी होती है जीत भी, हार-जीत दोनों एक ही तराजू के पलड़े।**

राव मेहर चंद सरस्वती विद्या मंदिर, भलस्वा, दिल्ली

कौशलपूर्ण शिक्षा का मूर्त रूप 'उमंग दीपावली हाट'

गाजियाबाद | विद्या भारती भावी वर्तमान पीढ़ी को शिक्षा प्रदान करने के साथ सामाजिक सहयोग, समरसता, कर्तव्यभाव विकसित करते हुए रोजगारपरक शिक्षा भी प्रदान कर रहा है। इन्हीं सब उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विद्या भारती अनेक योजनाएं संचालित करता रहता है, जिसमें से एक है विद्यालय स्तर पर मेले का आयोजन।

विद्या भारती की इसी योजना से प्रेरित होकर दुर्गावती हेमराज टाह सरस्वती विद्या मंदिर, गाजियाबाद में भव्य मेले का आयोजन किया गया। मेले का उद्घाटन नरेंद्र कश्यप जी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), उत्तर प्रदेश सरकार और विद्या भारती के क्षेत्रीय संगठन मंत्री डोमेश्वर साहू जी ने किया। मेले में खरीदारी करने के साथ आगंतुक विद्यार्थियों से संवाद भी करते दिखे। मेले का आकर्षण प्रमुख रूप से ढोल फॉर आल, फूड कोर्ट, म्यूजिकल चेयर, जादू शो, राजस्थानी और हरियाणवी लोकनृत्य, गेम्स जोन जिसमें 12 खेल पॉइंट थे आदि रहे।

श्रीमान यतीन्द्र जी, राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री विद्या भारती ने भी मेले का भ्रमण किया। विद्यार्थियों ने दीपावली मेले के माध्यम से विभिन्न परिस्थितियों को नियंत्रित करना, भिन्न-भिन्न लोगों से बात करना, संयम जैसे अनेक प्रकार के गुण सीखे जो व्यावहारिक जीवन के लिए उपयोगी होंगे। मेले के उपरान्त प्रत्येक छात्र को उनसे लिए गए 500 रुपये व आय से प्राप्त प्रत्येक के लिए 110 रुपये कुल 610 रुपये दिए।

इस मेले के माध्यम से विद्यालय महानगर के शिक्षा जगत, प्रशासन व अन्य विद्यालयों के संपर्क में आया। करीब 15 हजार लोगों ने मेले का भ्रमण किया।

मेले में जो छात्र पिछले वर्षों में पास होकर गए थे वे तो आये ही लगभग 20 साल पहले जो छात्र पास होकर गए थे वे भी अपने परिवार सहित आए। शहर में रहने वाले विद्यालय के पूर्व छात्र-छात्राओं का संपर्क एक-दूसरे से संपर्क हुआ।

मेले की योजना, नामकरण एवं बजट

मेला लगाने के विचार के साथ यह बात तय हुई कि छात्रों को ही मेला लगाने की पूरी जिम्मेदारी दी जाए। छात्र विद्यालय स्तर पर बनी वस्तुओं को स्वयं मेले में बेचें और स्वयं अपने स्टाल लगाएं।

आचार्य केवल मॉनिटरिंग करें और आवश्यकता पड़ने पर छात्रों का सहयोग करें। मेले का नाम 'उमंग दीपावली हाट' रखा गया। इसके बाद सिटी मजिस्ट्रेट ने अग्निशमन विभाग, यातायात विभाग और थाने से अनापत्ति प्रमाणपत्र प्राप्त करने के बाद मेला लगाने की अनुमति दे दी। मेले में टिकट का शुल्क 10 रुपये तय किया गया।

मेले का उद्देश्य – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का केंद्र बिन्दु छात्रों का सर्वांगीण विकास करना है। इसका अर्थ है कि जब तक छात्र अपनी विद्यालयीन शिक्षा पूर्ण करे तब तक वह आत्मविश्वास से परिपूर्ण, संवाद कौशल में निपुण, शारीरिक रूप से स्वस्थ व मजबूत, कुशल नेतृत्व करने वाला, विभिन्न परिस्थितियों में निर्णय करने में सक्षम, जीवन की चुनौतियों का मुकाबला करने में दृढ़ व तकनीकी रूप से कुशल बन जाना चाहिए। विद्यालय स्तर पर मेला उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति का सशक्त माध्यम लगा।

स्वावलंबी शिक्षा की ओर कदम

दुर्गावती हेमराज टाह सरस्वती विद्या मंदिर, नेहरू नगर, गाजियाबाद में मल्टी स्किल फाउंडेशन लैब

दुर्गावती हेमराज टाह सरस्वती विद्या मंदिर, नेहरू नगर, गाजियाबाद में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप विद्यालय में एक मल्टी स्किल फाउंडेशन लैब की शुरुआत अप्रैल 2022 में की गई। इस लैब का उद्देश्य छात्रों में तकनीकी कौशल विकसित करना है। यह विद्यार्थियों को शिक्षा के प्रारंभिक स्तर पर उनके तकनीकी कौशल को पहचानने में बहुत सहायता करता है।

गाजियाबाद | आज जहां एक ओर शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ तो वहीं दूसरी ओर बढ़ते मशीनीकरण के कारण रोजगार के अवसरों में कमी आई है। इसी रोजगार प्राप्ति हेतु व्यक्ति प्रतिस्पर्धा की अंधी दौड़ में शामिल हो रहा है। विद्यालय से निकलने के बाद विद्यार्थियों को बिना किसी प्रतिस्पर्धा की दौड़ में भागीदारी के आसानी से रोजगार के अवसर उपलब्ध हो सकें, इसके लिए वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में बदलाव की आवश्यकता अनुभव की गई। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में इस समस्या के समाधान के लिए वोकेशनल कोर्स के रूप में मल्टी स्किल फाउंडेशन कोर्स की व्यवस्था की गई है। इसमें बल दिया गया है कि प्रत्येक विद्यालय में मल्टी स्किल फाउंडेशन लैब बनाने के लिए कदम उठाए जाएं ताकि विद्यार्थी बौद्धिक ज्ञान के साथ-साथ तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर सके।

वर्तमान में विद्यालय में स्थापित लैब में चार विषय हैं–

1. एनर्जी एंड एनवायरमेंट –

वर्तमान में हम देखते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति पुराने तकनीकी और संसाधन को छोड़कर नई तकनीकी और संसाधन को अपना रहा है। आज मनुष्य आग और धुएं को छोड़कर विद्युत और इससे संचालित उपकरण की ओर बढ़ रहा है। ऐसे में यह कोर्स घरों में प्रयोग किए जाने वाले बल्ब व पंखे, हीटर, कूलर, स्विच आदि से संबंधित तकनीकी ज्ञान प्रदान करने में सहायक है। वैसे इस कोर्स को सी.बी.एस.ई. शिक्षा में 9th स्टैंडर्ड से लागू किया जाता है लेकिन हमने छोटी कक्षाओं में एक्सपोजर हेतु इसकी शुरुआत की है। इससे छात्र अपने घर के छोटे-मोटे कार्य करने में कुशल होंगे और साथ ही पर्यावरण को शुद्ध रखने में सहायक सिद्ध होंगे।

2. वर्कशॉप एंड इंजीनियरिंग टेक्निक्स –

इस कोर्स के माध्यम से विद्यार्थी मैकेनिकल वर्क की बेसिक जानकारी प्राप्त करते हैं। इसमें विद्यार्थी मशीनों सहित, स्कूटी, मोटरसाइकिल, कार आदि को खोलने, बांधने व सुधारने में निपुणता प्राप्त करते हैं। लकड़ी का कार्य जैसे मेज, कुर्सी, पलंग, अलमारी बनाना, आरी, बसूला, रंदा, हथौड़ा, इंची टेप आदि का प्रयोग करना सीखते हैं। छात्रों को मकान, दुकान निर्माण व मरम्मत तथा ईंट, सीमेंट, रोड़ी, बदरपुर आदि के सही अनुपात में मिश्रण के बारे में भी जानकारी मिलती है।

3. फूड एंड प्रोसेसिंग टेक्निक्स –

विज्ञान के अनुसार हमें कैसा भोजन करना है, हमारे शरीर के लिए कितनी मात्रा में भोजन आवश्यक है, कौन से पोषक तत्व हमारे शरीर के लिए उपयोगी हैं, इन सब की जानकारी छात्र इस कोर्स से प्राप्त करते हैं। साथ ही विद्यालय स्तर पर शुद्ध, सरल, सात्विक भोजन बनाने में निपुणता प्राप्त करते हैं।

4. गार्डनिंग-नर्सिंग एंड एग्रीकल्चर टेक्निक्स –

भारत एक कृषि प्रधान देश है लेकिन आज छात्रों में कृषि के प्रति रुझान कम हो रहा है। यह कोर्स छात्रों को कृषि की बेसिक जानकारी निराई, गुड़ाई व फसलों की बुआई, समय की जानकारी कराता है। इसके अलावा घरों में पौधे लगाना, उनको खाद-पानी तथा छटाई आदि करने में निपुण बनाता है। छात्र बीज लगाना व नए पौधे बनाना, नए पौधों की खोज तथा उन्नत किस्में तैयार करना सीखते हैं।

विद्यालय में स्थापित मल्टी स्किल फाऊंडेशन कोर्स लैब विद्यार्थियों को विद्यालय स्तर पर आत्मनिर्भर बनने का सुनहरा अवसर प्रदान करती है। विद्यार्थी अपने तकनीकी कौशल को पहचान कर नई-नई चीजें सीख रहे हैं। इस लैब से उन्हें भविष्य में अपनी रूचि के अनुसार कौशल का चुनाव करने में भी आसानी होगी। इस लैब से कौशल प्राप्त कर विद्यार्थी इंजीनियरिंग, होटल तथा कृषि क्षेत्र में रोजगार के अवसर प्राप्त कर पाएंगे।

विद्यालय में कौशल विकास : एक प्रयास ...

मध्य प्रदेश | सरस्वती ग्रामोदय गतिविधि आधारित विद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप विद्यार्थियों का विकास हो सके, इस हेतु से महती कार्य किये जा रहें है। विद्यालय परिवार कौशल विकास के लिये कृत संकल्पित है। हमारा प्रयास है कि विद्यालय का प्रत्येक छात्र किसी न किसी हस्त कौशल में निपुण हो सकें। इस हेतु से प्रशिक्षण कार्यशालायें एक साथ आयोजित की जा रही है जिससे विशेष शिक्षक तैयार हो सकें जो वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण कार्य करा सकें। कुछ विशेष पाठ्यक्रम विद्यालय द्वारा निर्धारित कियें है, जिससे छात्र स्किल्ड हो सकें। इनमें प्रमुख है बाँस कला, माटीकला, बढ़ई, करीगरी, विद्युत कार्य, प्लम्बिंग, वैल्डिंग एवं कृषि कार्य। उपरोक्त कार्यों में निपुणता हेतु श्रेष्ठ प्रशिक्षकों की आवश्यकता होती है। कुछ कार्य विद्यालय में वर्षभर संचालित होते है जैसे बढ़ई, विद्युत आदि इन कार्यो के संचालन के समय छात्रों को प्रशिक्षक के साथ संलग्न किया जा सकता है। विद्यालय में विद्युत संबंधी कार्य सिखाने के लिये प्रशिक्षक नियुक्त है। जिनके कालांश तय होने के साथ- साथ विद्युत कार्यशाला भी है जहाँ बच्चे प्रेक्टिकल तथा थ्योरी दोनों प्रकार का अध्ययन करते है। साथी ही घरों में खराब हुये विद्युत उपकरण एवं विद्यालय के खराब उपकरणों को प्रशिक्षण के मार्गदर्शन में सुधारते भी है। मोटर वाइंडिंग का कार्य वस्तुत: अलग है किन्तु उसे भी विद्यालय में विद्युत कार्यशाला से जोड़ा गया है। जहाँ घर पर खराब हुई कूलर पंखों आदि की मोटर वाइडिंग प्लंबिंग का कार्य जैसे नलों की टोटियाँ, दिवारों पर बोर्ड लगाना, पर्दे आदि के कार्य ग्रुप बनाकर छात्रों द्वारा ही किये जाते है। संस्था से संबंधित कृषि विज्ञान केन्द्र भी है जहाँ कृषि वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में बच्चे कृषि कार्यों की बारिकियों को समझते है एवं उनको प्रायोगिक रूप से करके भी देखते हैं जिससें कृषि संबंधी कौशल का का व्यावहारिक ज्ञान उन्हें प्राप्त होता है। हमारे एक अन्य प्रकल्प ग्रामज्ञान पीठ के कारिगरों के माध्यम से बच्चे बाँसकला एवं माटीकला का व्यवहारिक प्रशिक्षण की प्राप्त कर रहें है जिसमें बाँस के डस्टबीन, लैंप, सजावटी सामान तथा मिट्टी से प्लेट, कुल्हड, कटोरी, मूर्ति एवं अन्य खिलौने बनाना सीखते हैं। विद्यालय में मेहंदी, रंगोली, सिलाई एवं पाककला जैसे दैनिक उपयोगी कौशलों के लिये समय-समय पर विशेष प्रशिक्षण आयोजित किये जाते है। विद्यालय में वैल्डिंग कार्यों के लिये भी वर्कशॉप उपलब्ध है। जहाँ बैल्डिंग का कार्य सिखाया जाता हैं। वृहद कम्प्यूटर प्रयोगशाला है जिससे बच्चों को कोडिंग के साथ-साथ अन्य पी.टी.पी. का कार्य आदि के साथ-साथ हिन्दी, अंग्रेजी टाईपिंग सिखाई जाती है। कौशल विकास के व्यवहारिक पाठ्यक्रमों से बच्चों में आत्मनिर्भरता आती है जो उन्हें आत्मविश्वास से भर देती है जिससे जीवन की चुनौतियों का सामना करने में विद्यार्थी सक्षम बन पाते है।

सरस्वती ग्रामोदय विद्यालय गोविंदनगर,मध्य प्रदेश

कौशल विकास वर्ग का आयोजन, 22 विधाओं का दिया गया प्रशिक्षण

विभिन्न गतिविधियों में सर्वाधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया।
कक्षाएं 4th -10th , कुल छात्र – 951
संसाधक – 55 आचार्य एवं 7 अभिभावक
समयावधि – 2 दिन

हरियाणा | नंदलाल गीता विद्या मंदिर तेपला, अंबाला में दो दिवसीय कौशल विकास वर्ग का आयोजन किया गया। संचालन करते हुए श्रीमती हरजीत जी और आशा जी ने कौशल विकास वर्ग की विधाओं के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कौशल विकास वर्ग में काज करना, बटन लगाना, तरपाई करना, पोस्टर मेकिंग, वाद-विवाद, लकड़ी का काम, बिजली का काम, सलाद बनाना, योग, क्ले मॉडलिंग, प्लंबिंग, विद्युत कार्य, बागवानी, जैविक सब्जी वाटिका, भाषण कौशल, नृत्य, गायन, खेलकूद, वीडियोग्राफी, फोटोग्राफी, इंटरव्यू, बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट आदि के बारे में आदि के बारे में प्रशिक्षण दिया गया है।

प्राचार्य बलवंत सिंह जी ने कौशल विकास वर्ग का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहा कि विद्यार्थी को केवल पुस्तक ज्ञान ही आवश्यक नहीं है, अपितु दैनिक जीवन में उपयोग में आने वाली विधाओं का भी ज्ञान होना आवश्यक है। इस प्रकार के कार्यक्रम को विद्यालय का समय-समय पर आयोजित करने का उद्देश्य यही है कि विद्यार्थी अपने जीवन में किसी न किसी विधा में निपुणता प्राप्त करे। इस प्रकार की कार्यशालाओं से विद्यार्थियों का कौशल विकास होता है और इनके प्रति रुचि बढ़ती है।

नंदलाल गीता विद्या मंदिर तेपला, जिला अंबाला

- **विद्युत कार्य = 102**
- **वीडियोग्राफी = 8**
- **सिलाई = 25**
- **फोटोग्राफी = 5**
- **बढ़ईगीरी = 20**
- **पत्रकारिता = 2**
- **क्ले मॉडलिंग = 56**
- **आशु भाषण = 7**
- **खाना बनाना = 170**
- **स्किट, ड्रामा = 42**
- **पेंसिल स्केचिंग = 39**
- **घोषणा = 8**
- **बागवानी = 41**
- **बहस = 9**
- **किचन गार्डनिंग = 22**
- **पेपर रीडिंग = 6**
- **कला और शिल्प = 29**
- **कचरे से सर्वश्रेष्ठ = 9**
- **पोस्टर बनाना = 12**
- **योग = 54**
- **स्लोगन राइटिंग = 15**
- **खेल = 200**
- **नलसाजी = 45**
- **नृत्य और गीत = 25**

विज्ञान से व्यक्तित्व विकास

हरियाणा | विद्या भारती अपने विद्यालयों में अनेक ऐसी प्रतियोगिताएं एवं गतिविधियां आयोजित करती रहती है, जिससे विद्यार्थियों की रुचि कठिन लगने वाले विषयों जैसे विज्ञान, गणित में अधिक बढ़े। इसलिए ज्ञान विज्ञान मेला, गणित मेला विद्यालय स्तर से अखिल भारतीय स्तर तक आयोजित किए जाते हैं।

विद्यालय में ज्ञान विज्ञान मेले का आयोजन वर्ष 2012-13 से लगातार होता आ रहा है। प्रतिवर्ष ज्ञान विज्ञान मेले से विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति अधिक रुचि देखी गई है। रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान व जीव विज्ञान प्रयोगशाला में बच्चों को क्रिया आधारित शिक्षा व विज्ञान के प्रयोग नियमित रूप से कराए जाते हैं। इसका श्रेय हमारे पूर्व संगठन मंत्री श्री रवि कुमार को जाता है, जो अपने प्रवास पर आग्रहपूर्वक आचार्यों को इसके लिए प्रोत्साहित करते थे। प्रयोगशाला में प्रयोग के सुखद परिणाम सामने आए हैं। विद्यालय के 3 बच्चों प्राची, अमन एवं हर्ष ने वर्ष 2019 में विज्ञान प्रश्न मंच में अखिल भारतीय स्तर पर प्रतिभागिता की।

राजकीय प्रतियोगिताओं में कई बच्चे श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करते रहे हैं। सत्र 2021-22 में वरिष्ठ माध्यमिक कक्षा की 3 बच्चों की टीम राजकीय व्यवस्था द्वारा आयोजित जिला स्तर पर विज्ञान प्रश्न मंच में प्रथम स्थान पर रही। इसमें एक राउंड में 10 प्रश्न प्रयोगशाला के उपकरणों की पहचान पर आधारित थे। इन सभी प्रश्नों के सही उत्तर विद्यालय के छात्रों ने दिए। बच्चों को विज्ञान को आसानी से समझाने के लिए कपूरथला विज्ञान केंद्र में भ्रमण हेतु ले जाया जाता है। 2012-13 से अब तक प्रतिवर्ष विज्ञान मेले में 60 प्रतिशथ विद्यार्थी भाग लेते हैं।

विज्ञान प्रयोगशाला स्थापना वर्ष

रसायन विज्ञान :- 2014

भौतिक विज्ञान :- 2014

जीव विज्ञान :- 2018

इन प्रयोगशालाओं में कक्षा 6 से 12 ले विद्यार्थी नियमितरूप से जाते हैं। विद्यालय प्रधानाचार्य इस कार्य में विशेष रुचि लेते हैं।

विज्ञान विषय में उपलब्धियां

- **सत्र 2016-17 बाल वर्ग, विज्ञान प्रश्न मंच, क्षेत्रीय स्तर पर तीसरा स्थान।**
- **सत्र 2017-18 विज्ञान प्रश्न मंच, किशोर वर्ग, राष्ट्रीय स्तर पर चौथा स्थान।**
- **सत्र 2021-22 जिला स्तरीय विज्ञान प्रश्न मंच प्रतियोगिता में विद्यालय की टीम प्रथम रही।**
- **सत्र 2022-23 तरुण वर्ग, विज्ञान प्रश्न मंच, क्षेत्रीय स्तर पर चौथा स्थान एवं विज्ञान प्रयोग में प्रांत स्तर पर दूसरा स्थान तथा विज्ञान प्रदर्श में किशोर वर्ग का प्रांत स्तर पर प्रथम स्थान रहा।**
- **सत्र 2022-23 विज्ञान संकाय की छात्रा वैष्णवी कालड़ा ने सीनियर सेकेंडरी की बोर्ड परीक्षा में जिले में प्रथम स्थान अर्जित किया। रसायन विज्ञान में 99, भौतिक विज्ञान और जीव विज्ञान में 97 अंक प्राप्त किए। वैष्णवी को 15 अगस्त को मुख्यमंत्री ने सम्मानित किया।**

अन्य उपलब्धियां

- **सत्र 2017-18 रिया धीमान प्रांत स्तर पर कक्षा 10वीं की बोर्ड परीक्षा में तीसरे स्थान पर रही।**
- **सत्र 2018-19 जिला स्तर पर 10वीं बोर्ड परीक्षा में पांचवां एवं छठा स्थान विद्यालय की छात्राओं ने अर्जित किया।**
- **सत्र 2022-23 में कक्षा बारहवीं की छात्रा वैष्णवी कालड़ा ने 486 अंक प्राप्त करते हुए जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया।**

प्रयोगशाला के अलावा विज्ञान विषय पर हुए प्रयोग

- **दक्षता वर्ग में विज्ञान विषय के आचार्यों ने अन्य आचार्यों को विज्ञान विषय की आधारभूत अवधारणाएं प्रयोग विधि से बताईं।**
- **सत्र 2022-23 में रोबोटिक लैब के सेमिनार को ऑर्गेनाइज किया गया, जिसमें बच्चों ने स्वयं रोबोटिक कार बनाकर देखी।**
- **विज्ञान प्रयोगशाला के बरामदे में विज्ञान विषय पर आधारित wall painting की गई है। जिसे वहाँ ने जाने वाले विद्यार्थी रुचि लेकर देखते हैं और समझते हैं।**

श्रीमद्भगवद्गीता वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नारायणगढ़, (अंबाला) हरियाणा